प्रातः क्लास 5-6-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप कहे बच्चों को आत्म-अभिमानी वा देही अभिमानी हो बैठो। क्योंकि आत्मा में ही अच्छी वा बुरी संस्कार भरी जाती है। सभी का असर आत्मा पर पड़ता है। आत्मा को ही पतित कहा जाता है। पतित आत्मा कहा जाता है तो जरूर जीवात्मा ही होगा ना। आत्मा शरीर साथ ही होगी। पहलो2 बात कहते हैं आत्मा होकर बैठो। अपने को शरीर नहीं, आत्मा समझ बैठो। आत्मा ही इन आरगन्स को चलाती है। घड़ी2 अपने को आत्मा समझने से परमात्मा याद आवेगा। अगर देह याद आई तो देह का बाप याद आवेगा। इसलिए ही बाप कहते हैं आत्मा-अभिमानी बनो। बाप पढ़ा रहे हैं। यह है पहला सबक। तुम आत्मा अविनाशी हो। शरीर विनाशी है। अविनाशी आत्माओं को अविनाशी परमात्मा ज्ञान देने आये हैं। हम आत्मा हैं यह पहला सबक है। याद नहीं करेंगे तो कच्चे पड़ जावेंगे। मैं आत्मा हूं, शरीर नहीं हूं, यह सबक इस समय बाप पढ़ाते हैं। आगे कोई भी पढ़ाते नहीं थे। बाप आये ही हैं आत्म-अभिमनी बना कर ज्ञान देने लिए। पहला नम्बर ज्ञान देते हैं हे आत्माएं तुम पतित जरूर हो। क्योंकि यह है ही पतित पुरानी दुनिया। पुरानी दुनिया में सभी पतित ही होते हैं। प्रदर्शनी में भी तुम बच्चे बहुतों को समझाते हो। प्रश्न आद करते हैं। तो जब दिन के टाईम रेस्ट मिलती है उस समय आपस में मिलना चाहिए। किसने क्या2 प्रश्न पूछे, हम ने क्या समझाया। फिर उनको समझाना है इस पर ऐसे नहीं ऐसे समझाना चाहिए। समझाने की युक्ति सभी की एक नहीं होती है। मूल बात है अपने को आत्मा हो या देह। क्योंकि दो बाप सभीके जरूर हैं। जो भी देहधारी बाप है उनका लौकिक बाप भी है पारलौकिक भी है। एक बड़ा बेहद का बाप, एक छोटा हद का बाप। हद का बाप तो कामन है। यहां तुमको मिला है बेहद का बाप। तुम जानते हो वह हम आत्माओं को बैठ समझाते हैं। वह एक ही बाप भी है टीचर भी है, गुरु भी है। यह पक्का कर देना चाहिए। जब तुम किसको समझाते हो, जो2 प्रश्न तुम से पूछते हैं उस पर आपस में बैठना चाहिए। हरेक सुनावे हम से फलाने ने यह यह पूछा है हमने यह रेसपाण्ड किया। प्रश्न तो भिन्न2 पूछेंगे। उनका रेसपाण्ड चाहिए रीयल। देखना चाहिए उनको कशिश में लाया, सैटिसफाय हुआ। नहीं तो फिर क्वेश्चन निकालनी चाहिए। जो होशियार है उनको भी बैठना चाहिए। छुड़ विछुड़ हो जाना है। तुमको टाईम मिलता है दिन के समय। ऐसी नहीं कि भोजन खाते हैं इसलिए नींद आती है। जो बहुत खाना खाते हैं उनको नींद की घर आ जाती है। देवतायें खाना बहुत ही थोड़ा खाते हैं। क्योंकि सुक्ष्म है ना। इसलिए कहा जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। ब्राह्मण बनने में बड़ी खुशी है। ब्राह्मण बनते हैं तब ही उनको खुशी मिलती है। देवताओं को खुशी है ना। क्योंकि उनके पास धन माल महल आद सभी कुछ है। तो उनके लिए खुशी ही काफी है। खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा खावेंगे। यह भी एक कायदा है। जास्ती खाने वाले को जास्ती नींद आवेगी। घर जिसको आती होगी वह किसको समझा न सकेंगे। जैसे लाचार। यह ज्ञान की बातें तो बड़ी ही खुशी से सुननी और सुनाना चाहिए। समझाने में भी सहज होगा। मूल बात है बाप का परिचय। ब्रह्मा को तो कोई जानते नहीं। यह भी समझते हो प्रजापिता ब्रह्मा है। ढेर के ढेर प्रजा है। यह प्रजापिता ब्रह्मा कैसे होगा इस पर बहुत अच्छी रीत समझाना है। कई मनुष्य ब्रह्मा को देख भूलते हैं। और इतनी ब्रह्माकुमारियां हैं। तो जरूर प्रजापिता होगा ना। प्रजापिता बिगर प्रजा कैसे होगी। शिव बाबा के सन्तान तो ठीक हैं। परन्तु प्रजा के रूप में कैसे आवे। प्रजापिता ब्रह्मा। बाप ने समझाया है इनके बहुत जन्मों के अन्त में वानप्रस्त अवस्था में मैं प्रवेश करता हूं। नहीं तो रथ कहां से आवे। रथ गाया हुआ ही है शिव बाबा के लिए। रथ में कैसे आते हैं। इसमें मुंझे हैं। रथ तो जरूर चाहिए ना। कृष्ण तो हो न सके। तो जरूर ब्रह्मा द्वारा समझावेंगे। ऊपर से तो नहीं बोलेंगे। ब्रह्मा से कहां आया। बाप ने सुनाया मैं इन में प्रवेश करता हूं। जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। यह खुद नहीं मैं सुनाता हूं। इनमें बहुत मुंझे हैं। कृष्ण को तो रथ की दरकार ही नहीं। कृष्ण कहने से फिर तो भागीरथ हो जाती। कृष्ण को भागीरथ नहीं कहा जाता। उनका तो पहला जन्म है प्रिन्स का। तो बच्चों को - - - -

अन्दर में घोटना चाहिए, बिचारसागर मथन करना चाहिए। यह तो बच्चे जानते हैं वह बात तो नहीं है जो शास्त्रों में लिखा दी है। बाकी यह ठीक है। बिचार सागर मथन हुआ, कलश ल० को दिया। उसने फिर औरों को अमृत पिलाया। तब ही स्वर्ग के गेटस खुले। परन्तु परमपिता परमात्मा को तो बिचार सागर मथन करने की दरकार ही नहीं। वह तो बीज रूप है। उनमें नालेज है। वही जानते हैं। तुम भी नहीं जानते थे। अभी यह अच्छी रीतसमझना जरूर है। समझने बिगर देवता पद कैसे पावेंगे। बाप समझाते हैं आत्माओं को रिफ्रेश करने लिए। बाकी तो कुछ भी जानते ही नहीं। वह है सारा भक्ति मार्ग। भक्ति मार्ग को बिल्कुल अलग, ज्ञान मार्ग को बिल्कुल अलग रखना है। बापआकर समझाते हैं अभी तुम्हारा संगर भक्ति मार्ग से उठा। अभी ज्ञान मार्ग में चला है। बाप बच्चों को मुख्य बात तो यही समझाते हैं कि पहले2 दो बाप का परिचय दो। साधु सन्त आद कभीऐसे नहीं कहेंगे कि तुमको दो बाप है। वह तो बाप को जानते ही नहीं। बाप खुद कहते हैं मैंतुमको ज्ञान देता हूं। वह प्रायः लापे हो जाता है। एक है निराकारी, दुसरा है साकारी बाप। समझाया तो बहुत अच्छा जाता है। परन्तु माया ऐसी है तो कशिश कर गन्द में ले जाती है। पतित बन पड़ते हैं। बाप समझाते हैं यह वैश्यालय विनाश होना है। मै शिवालय की स्थापना करने आया हूं। सतयुग को कहेंगे शिवालय। कोई पूछे शिवालय किसने स्थापन किया। बोलो शिव बाबा ने। नाम ही है शिवालय। यह है वैश्यालय। 5विकार रूपी माया रावण ने वैश्यालय बनाया है। रामराज्य और रावण राज्य बिल्कुल कामन है। रावण राज्य कहा जाता है रात को। जब कि मनुष्य पतित बनते हैं। सतयुग त्रेता में कोई भी मनुष्य पतित होता ही नहीं। उसको कहा जाता है स्वर्ग। दुनिया यह नहीं जानती स्वर्ग किसने स्थापन किया। अभी तुम समझाते हो शिव बाबा ही शिवालय स्थापन करते हैं। शिवालय का उद्घाटन किसने किया? बेहद के बाप ने। वा स्वर्ग की स्थापना तो जरूर भगवान ही करेंगे। अभी तो है शैतानी राज्य। बाप कहते हैं काम चिक्षा पर चढ़ एकदम कब्रस्तान में आकर पड़े हो। फिर यहां ही परिस्तान होगा जरूर। आधा कल्प परिस्तान आधा कल्प कब्रस्तान चलता है। फिर बाप आकर परिस्तान की स्थापना करते हैं। यह भी जानते हो अभीसभी कब्र दाखिल होने हैं। काम चिक्षा पर चढ़े हुये हैं ना। सभी कब्र दाखिल होने हैं। तुम सीढ़ी पर अच्छी रीत समझा सकते हो। यह है ही कब्रस्तानियों का राज्य। विनाश तो जरूर होना ही है। इस धरणी पर अभी कब्रस्तान है। फिर यही धरणी चेंज हो जावेगी। अर्थात आयन एजेड दुनिया बदलकर गोल्डेन एजेड दुनिया होगी। फिर दो कला कम होगी। तत्वों की भी कला कम होती जाती है। तो फिर उपद्रव मचाते हैं। सतयुग में उपद्रव नहीं मचाते। यहा तो हरेक चीज़ उपद्रव मचाती है। पानीभी कितना उपद्रव मचाती है। सभी माया के गुलाम बन पड़े हैं। अभी तुमको रावणको गुलाम बनाना है। यह भी हार और जीत का जेल बना हुआ है। जिसको अच्छी रीत समझना है। अगर नहीं समझते तो गोया कौड़ी मिशल है। कोई वैल्यु नहीं। यह वैल्यु वैल्यु तो बाप बैठ बतलाते हैं। गाया भी जाता है हीरे जैसा जन्म... तुम भी पहले बाप को नहीं जानते थे। तो कौड़ी जैसी वैल्यु थी। अभी बाप आकर हीरे जैसा बनाते हैं। बाप से हीरे जैसा जन्म मिलता है। फिर कौड़ी जैसे क्यों बन पड़ते हो। ईश्वरीय सन्तान हो ना। गायन भी है आत्मायें और परमात्मा। वहां शान्तिधाम में जब है तोउस मिलन में कोई फायदा नहीं होता। वह तो सिर्फ पवित्रता का स्थान है। यहां तो तुम जीवात्मायें हो। और परमात्मा बाप उनको अपना शरीरनहीं है। वह शरीरधारण कर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम बाप को जानते हो। और कहते हो बाबा। बाप भी कहते हैं ओ बेटे। लौकिक बाप भी कहेंगे बाल बच्चों आओ तो तुमको टौली खिलाऊं। झट सभी भागेंगे। यह बाप भी कहते हैं बच्चे आओ तुमको बैकुण्ठ का मालिक बनाते हैं। तो जरूर सभी भागेंगे। अगर नहीं आते तो मूर्ख कहेंगे ना। पुकारते भी हैं हम पतितों को पावन बनाओ। अभी निश्चय है तो मानना चाहिए ना। बुलाया भी है बच्चों ने। आये भी बच्चों के लिए हैं। बच्चों को ही कहते हैं तुम ने बुलाया हमें आया हूं। पतित पावन भी बाप को ही कहते हैं। गंगा आद के पानीसे तुम पावन नहीं बन सकते हो।

आधा कल्प तुम भूलमें चले हो। भगवान को ढूढ़ते हैंपरन्तु किसको भी समझ में नहीं आता। बाप कहते हैं बच्चों तो तुम बच्चों को भी उस हुलास से निकलना चाहिए। हे बाबा। परन्तु इतना हुलास से निकलता नहीं हैं। इनको देह-अभिमान कहा जाता। न कि देही अभिमानी। अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। बेहद के बाप को याद करने से बेहद की बदशाही जरूर याद आवेंगी। ऐसे बाप को कितना प्यार से रेसपाण्ड करना चाहिए। बाप तुम्हारे बुलाने से आया है। ड्रामा अनुसार। एक मिनट भी आगे पीछे नहीं हो सकता। सभी कहते हैं ओ फादर। रहम करो लिबरेट करो। अभी हम सभी रावण के जंजीरों में है। आप हमारे गाईड बनो। तो बाप गाईड भी बनते हैं। सभी उनको बुलाते हैं। ओ लिबरेटर ओ गाईड। आकर हमारा गाईड बनो। हमको भी साथ ले चलो। अभी तुम संगम पर खड़े हो। बाप सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। यह है कलियुग। 500करोड़ मनुष्य हो हैं। सतयुग में सिर्फ दुवीदेवतायें ही होते हैं। तो जरूर विनाश होता होगा। वह भी सामने खड़ा है। जिसके लिए गायन है सायंस घमण्डी तो कितना बुध से अकल निकालते हैं। कहते हैं एक दुनिया तो क्या 4 5 दुनियायें हो तो भी यहां बैठे खत्म कर देंगे। वह है यादव सम्प्रदाय। फिर हिस्ट्री रिपीट होनी है। अभी तो सतयुग की हिस्ट्री रिपीट होनी है। अभी तो सतयुग की हिस्ट्री रिपीट होगी। तुम समझते हो हम नई दुनिया में ऊंच पद पाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। पवित्र जरूर बनना है। तुमसमझाते हो आठ नव वर्ष में विनाश होना है। बच्चेआद तो तुम्हारे जीते म रहेंगे। न कोई वार्स बनेंगे न शादी आद करेंगे। बहुत गई बाकी थोड़ी रही। थोड़ा समय है। उनका भी हिसाब है। आगे ऐसे नहीं कहते थे। अभी टाईम थोड़ा है। पहले वाले जो मरे हुये हैं वहा जन्म नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार लिया है। कोई बहुत यहां आते भी होंगे। दिखाई पड़ता है जैसे कि यहां का बिछुड़ा हुआ है। उन को ज्ञान बिगर मज़ा ही नहीं आता। मा बाप को भी कहते हैं हम यहां जावेंगे। यह तो सहज समझने का बातें हैं। विनाश तो जरूर होना ही है। लड़ाई की तैयारी भी देख रहे हो। आधा खर्चा इन्हों का इस लड़ाई के सामान में ही लग जाता है। ऐरोपलेन आद कैसे2 बनाते हैं। न एरोपलेन काम आवेंगे न बारूद का मैआवेंगा। वह कोशिश कर इम्प्रू करते जाते हैं। कहते हैं घर बैठे भी सारी खलास हो जाये। ऐसी2 चीज़ें बनाते रहते हैं। क्योंकि हास्पीटल आद तो रहेंगे नहीं। ड्रामा में यह भी जैसे बाप के ईशारे मिलते हैं। वह भी ड्रामा में नूंध है। समझते हैं ऐसा न हो जो बिमार पड़ जाये। मरना तो सभी को जरूर है। राम गयो . . जो योग में रह आयु बढ़ाते होंगे उनकी आयु जरूर बढ़ेगी। तुम कहेंगे फलानी क्यों गई। बाबा कहेंगे योग की ताकत न थी। इसलिए आयु नहीं बढ़ी। योगबल हो तो आयु भी बढ़ती रहे। अकाले मृत्यु क्यों होना चाहिए। योगबल वाले अपनी आयु को बढ़ाते रहेंगे। अपनी खुशी से शरीर छोड़ेंगे। जैसे बादामिशाल बताते हैं ब्रहमाज्ञानी है वह भी ब्रहम में जाने लिएऐसे ह खुशी से शरीर छोड़ते हैं। परन्तु ब्रहम में कोई जाते नहीं हैं। न पाप कटते हैं। पुनर्जन्म फिर भी यहां ही लेते हैं। पाप कटने की युक्ति बाप ही बतलाते हैं कि मामेकं याद करो। और कोई को याद न करना है। ल0ना0 का भी याद न करना है। तुम जानते हो इस पुरुषार्थ से हम यह पद पाते हैं। स्वर्ग की स्थापना हो रही है। हम पढ़ रहे हैं यह पद पाने लिए। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार इन्हों की जो डिनायस्टी चली है वह बाप अभी स्थापन कर रहे हैं पुरुषोत्तम संगम युगपर। तुम भाषण आद भी ऐसा करो तो स्वयुरेट किसकी बुधि में घुस जाये। पहले2 बाप की पहचान। तुम किसके बच्चे हो। बाप का नाम तुम झट कहेंगे शिव बाबा के बच्चे हैं। और साकारी ब्रहमा के बच्चे और बच्चियां हैं। इससमय है ईश्वरीयसम्प्रदाय और प्रजापिता ब्रहमा मुखवंशावली। हम सभी भाईबहन है। ब्रहमा कुमार-कुमारियों की शादी-मुरादी होती नहीं। यह भी बाप समझाते हैं कई गिर पड़ते हैं। कामअग्नि जलाते हैं परन्तु डर रहता है एक बार हम गिरा तो कमाई चुट हो जावेंगी। काम से हराया तो पद भ्रष्ट हो जावेंगे। कमाईकितनी बड़ी है। मनुष्य करके पदम करोड़ कमाते हैं उनको यह थोड़े ही पता है कि8-9वर्षमें यह खत्म होनाहै। बम्स बनाने वाले जानते हैं यह दुनिया खत्म होनी है। कोई हमको प्रेस्ते हैं। हम बनाते रहते हैं। अच्छा मीठे2 बच्चों को गुडमार्निंग।